श्रीमद् भागवत का यह सार
भगवद् भक्ति ही आधार

श्रीमद्भागवत रसिक कुटुंब

ब्रह्मा आदि देवताओं द्वारा नृसिंह भगवान की स्तुति

Sb 7.8.40-56

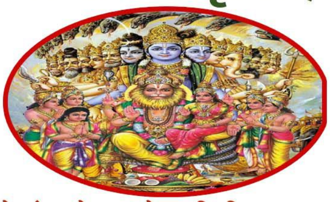

प्रगटे स्तंभ को फाड़ के नरहरि, किया असुर उद्धार।
बांध अंजलि स्तुति को गाते, सकल देव संसार

नारायणं(न्) नमस्कृत्य, नरं(ञ्) चैव नरोत्तमम्।
देवीं(म्) सरस्वतीं(वँ) व्यासं(न्), ततो जयमुदीरयेत्

नामसङ्कीर्तनं(यँ) यस्य, सर्वपापप्रणाशनम्।
प्रणामो दुःखशमनस्, तं(न्) नमामि हरिं(म्) परम्

श्रीमद्भागवतमहापुराणम्
सप्तमः स्कन्धः
॥ अथ अथाष्टमोऽध्यायः ॥

ब्रह्मोवाच

नतोऽस्म्यनन्ताय दुरन्तशक्तये
विचित्रवीर्याय पवित्रकर्मणे ।
विश्वस्य सर्गस्थितिसं(यँ)यमान् गुणैः(स्)
स्वलीलया सन्दधतेऽव्ययात्मने ॥ 40॥

ब्रह्माजीने कहा— प्रभो! आप अनन्त हैं। आपकी शक्तिका कोई पार नहीं पा सकता। आपका पराक्रम विचित्र और कर्म पवित्र हैं। यद्यपि गुणोंके द्वारा आप लीलासे ही सम्पूर्ण विश्वकी उत्पत्ति पालन और प्रलय यथोचित ढंगसे करते हैं—फिर भी आप उनसे कोई सम्बन्ध नहीं रखते, स्वयं निर्विकार रहते हैं। मैं आपको नमस्कार करता हूँ

श्रीरुद्र उवाच

कोपकालो युगान्तस्ते हतोऽयमसुरोऽल्पकः ।

तत्सुतं(म्) पाह्युपसृतं(म्) भक्तं(न्) ते भक्तवत्सल ॥ 41॥

श्रीरुद्रने कहा- आपके क्रोध करनेका समय तो कल्पके अन्तमें होता है। यदि इस तुच्छ दैत्यको मारनेके लिये ही आपने क्रोध किया है तो वह भी मारा जा चुका। उसका पुत्र आपकी शरणमें आया है। भक्तवत्सल प्रभो ! आप अपने इस भक्तकी रक्षा कीजिये

इन्द्र उवाच

प्रत्यानीताः(फ्) परम भवता त्रायता नः(स्) स्वभागा

दैत्याक्रान्तं(म्) हृदयकमलं(न्) त्वद्गृहं(म्) प्रत्यबोधि ।

कालग्रस्तं(ङ्) कियदिदमहो नाथ शुश्रूषतां(न्) ते

मुक्तिस्तेषां(न्) न हि बहुमता नारसिं(म्)हापरैः(ख्) किम् ॥ 42॥

इन्द्रने कहा- पुरुषोत्तम। आपने हमारी रक्षा की ! है। आपने हमारे जो यज्ञभाग लौटाये हैं, वे वास्तवमें आप (अन्तर्यामी) के ही हैं। दैत्योंके आतङ्क सङ्कुचित हमारे हृदयकमलको आपने प्रफुल्लित कर दिया। वह भी आपका ही निवासस्थान है। यह जो स्वर्गादिका राज्य हमलोगोंको पुनः प्राप्त हुआ है, यह सब कालका ग्रास है। जो आपके सेवक हैं, उनके लिये यह है ही क्या? स्वामिन् । जिन्हें आपकी सेवाकी चाह है, वे मुक्तिका भी आदर नहीं करते। फिर अन्य भोगोंकी तो उन्हें आवश्यकता ही क्या है

ऋषय ऊचुः

त्वं(न्) नस्तपः(फ्) परममात्थ यदात्मतेजो

येनेदमादिपुरुषात्मगतं(म्) ससर्ज ।

तद्विप्रलुप्तममुनाद्य शरण्यपाल

रक्षागृहीतवपुषा पुनरन्वमं(म्)स्थाः ॥ 43॥

ऋषियोंने कहा- पुरुषोत्तम ! आपने तपस्याके द्वारा ही अपनेमें लीन हुए जगत्की फिरसे रचना की थी और कृपा करके उसी आत्मतेजःस्वरूप श्रेष्ठ तपस्याका उपदेश आपने हमारे लिये भी किया था। इस दैत्यने उसी तपस्याका उच्छेद कर दिया था। शरणागतवत्सल ! उस तपस्याकी रक्षाके लिये अवतार ग्रहण करके आपनेहमारे लिये फिरसे उसी उपदेशका अनुमोदन किया है

पितर ऊचुः

श्राद्धानि नोऽधिबुभुजे प्रसभं(न्) तनूजैर्-

दत्तानि तीर्थसमयेऽप्यपिबत्तिलाम्बु ।

त*स्योदरान्नखविदीर्णवपाद्य आर्च्छ-

त*स्मै नमो नृहरयेऽखिलधर्मगोप्त्रे ॥ 44॥

पितरोंने कहा प्रभो। हमारे पुत्र हमारे लिये पिण्डदान करते थे, यह उन्हें बलात् छीनकर खा जाया करता था जब वे पवित्र तीर्थमें या संक्रान्ति आदिके अवसरपर नैमित्तिक तर्पण करते या तिलाञ्जलि देते, तब उसे भी यह पी जाता। आज आपने अपने नखोसे उसका पेट फाड़कर वह सब का सब लौटाकर मानो हमें दे दिया। आप समस्त धर्मकि एकमात्र रक्षक हैं। नृसिंहदेव ! हम आपको नमस्कार करते हैं

सि*द्धा ऊचुः

यो नो गतिं(यँ) योगसि*द्धामसाधु-

रहार्षीद्योगतपोबलेन ।

नानादर्पं(न्) तं(न्) नखैर्निर्ददार

त*स्मै तु*भ्यं(म्) प्रणताः(स्)स्मो नृसिं(म्)ह ॥ 45॥

सिद्धोंने कहा - नृसिंहदेव ! इस दुष्टने अपने योग और तपस्याके बलसे हमारी योगसिद्ध गति छीन ली थी। अपने नखोंसे आपने उस घमंडीको फाड़ डाला है। हम आपके चरणों में विनीत भावसे नमस्कार करते है

वि*द्याधरा ऊचुः

वि*द्यां(म्) पृथ*ग्धारणयानुराद्धां(न्)

न्यषेधद*ज्ञो बलवीर्यद*प्तः ।

स येन सङ्ख्ये पशुव*द्धत*स्तं(म्)

मायानृसिं(म्)हं(म्) प्रणताः(स्) स्म नि*त्यम् ॥ 46॥

विद्याधरोंने कहा 1- यह मूर्ख हिरण्यकशिपु अपने बल और वीरताके घमंडमें चूर था। यहाँतक कि हम लोगोंने विविध धारणाओंसे जो विद्या प्राप्त की थी, उसे | इसने व्यर्थ कर दिया था। आपने युद्धमें

यज्ञपशुकी तरह इसको नष्ट कर दिया। अपनी लीलासे नृसिंह बने हुए आपको हम नित्य निरन्तर प्रणाम करते हैं

नागा ऊचुः

येन पापेन रत्नानि स्त्रीरत्नानि हृतानि नः ।

तद्वक्षः(फ्)पाटनेनासां(न्) दत्तानन्द नमोऽस्तु ते ॥ 47॥

नागोंने कहा- इस पापीने हमारी मणियों और हमारी श्रेष्ठ और सुन्दर स्त्रियोको भी छीन लिया था।आज उसकी छाती फाड़कर आपने हमारी पत्नियोंको बड़ा आनन्द दिया है। प्रभो! हम आपको नमस्कार करते हैं

मनव ऊचुः

मनवो वयं(न्) तव निदेशकारिणो

दितिजेन देव परिभूतसेतवः ।

भवता खलः(स्) स उपसं(म्)हृतः(फ्) प्रभो

करवाम ते किमनुशाधि किङ्करान् ॥ 48॥

मनुओंने कहा- देवाधिदेव! हम आपके आज्ञाकारी मनु है। इस दैत्यने हमलोगोकी धर्ममर्यादा भंग कर दी थी। आपने उस दुष्टको मारकर बड़ा उपकार किया है। प्रभो! हम आपके सेवक है। आज्ञा कीजिये, हमआपकी क्या सेवा करें ?

प्रजापतय ऊचुः

प्रजेशा वयं(न्) ते परेशाभिसृष्टा

न येन प्रजा वै सृजामो निषिद्धाः ।

स एष त्वया भिन्नवक्षा नु शेते

जगन्मङ्गलं(म्) सत्त्वमूर्तेऽवतारः ॥ 49॥

प्रजापतियोंने कहा— परमेश्वर! आपने हमें प्रजापति बनाया था। परन्तु इसके रोक देनेसे हम प्रजाकी सृष्टि नहीं कर पाते थे। आपने इसकी छाती फाड़ डाली और यह जमीनपर सर्वदाके लिये सो गया। सत्त्वमय मूर्ति धारण करनेवाले प्रभो! आपका यह अवतार संसारके कल्याणके लिये है ।

गन्धर्वा ऊचुः

वयं(वँ) विभो ते नटनाट्यगायका

येनात्मसाद्वीर्यबलौजसा कृताः ।

स एष नीतो भवता दशामिमां(ङ्)

किमुत्पथस्थः(ख्) कुशलाय कल्पते ॥ 50॥

गन्धर्वोंने कहा—प्रभो ! हम आपके नाचनेवाले, अभिनय करनेवाले और संगीत सुनानेवाले सेवक हैं। इस दैत्यने अपने बल, वीर्य और पराक्रमसे हमें अपना गुलाम बना रखा था। उसे आपने इस दशाको पहुँचा दिया। सच है, कुमार्गसे चलनेवालेका भी क्या कभी कल्याण हो सकता है ?

चारणा ऊचुः

हरे तवाङ्घ्रिपङ्कजं(म्) भवापवर्गमाश्रिताः ।

यदेष साधुहृच्छयस्त्वयासुरः(स्) समापितः ॥ 51॥

चारणोंने कहा— प्रभो! आपने सज्जनोंके हृदयको पहुंचानेवाले इस दुष्टको समाप्त कर दिया। इसलिये हम आपके उन चरणकमलोंकी शरणमें हैं, जिनके प्राप्त होते ही जन्म-मृत्युरूप संसारचक्रसे छुटकारा मिल जाता है

यक्षा ऊचुः

वयमनुचरमुख्याः(ख्) कर्मभिस्ते मनोज्ञै-

स्त इह दितिसुतेन प्रापिता वाहकत्वम् ।

स तु जनपरितापं(न्) तत्कृतं(ञ्)जानता ते

नरहर उपनीतः(फ्) पञ्चतां(म्) पञ्चविं(म्)श ॥ 52॥

यक्षोंने कहा - भगवन्! अपने श्रेष्ठ कर्मो के कारण हमलोग आपके सेवकोंमें प्रधान गिने जाते थे। परन्तु हिरण्यकशिपुने हमे अपनी पालकी ढोनेवाला कहार बना लिया। प्रकृतिके नियामक परमात्मा ! इसके कारण होनेवाले अपने निजजनोंके कष्ट जानकर ही आपने इसे मार डाला है

किम्पुरुषा ऊचुः

वयं(ङ्) किम्पुरुषास्त्वं(न्) तु महापुरुष ईश्वरः ।

अयं(ङ्) कुपुरुषो नष्टो धिक्कृतः(स्) साधुभिर्यदा ॥ 53॥

किम्पुरुषोंने कहा- हमलोग अत्यन्त तुच्छ किम्पुरुष हैं और आप सर्वशक्तिमान् महापुरुष हैं। जब सत्पुरुयोंने इसका तिरस्कार किया इसे पिकारा तभी आज आपने इस कुपुरुष — असुराधमको नष्ट कर दिया ।

वैतालिका ऊचुः

सभासु सत्रेषु तवामलं(यँ) यशो
गीत्वा सपर्यां(म्) महतीं(लँ) लभामहे ।
यस्तां(म्) व्यनैषीद्भृशमेष दुर्जनो
दिष्ट्या हतस्ते भगवन् यथाऽऽमयः ॥ 54॥

वैतालिकोंने कहा -भगवन्! बड़ी-बड़ी सभाओं और ज्ञानयज्ञो आपके निर्मल यशका गान करके हम बड़ी प्रतिष्ठा-पूजा प्राप्त करते थे। इस दुष्टने हमारीवह आजीविका ही नष्ट कर दी थी। बड़े सौभाग्यकी बात है कि महारोगके समान इस दुष्टको आपने जड़मूलसे उखाड़ दिया ।

किन्नरा ऊचुः

वयमीश किन्नरगणास्तवानुगा
दितिजेन विष्टिममुनानुकारिताः ।
भवता हरे स वृजिनोऽवसादितो
नरसिं(म्)ह नाथ विभवाय नो भव ॥ 55॥

किन्नरोंने कहा 1-हम किन्नरगण आपके सेवक हैं। यह दैत्य हमसे बेगारमें हो काम लेता था। भगवन् ! आपने कृपा करके आज इस पापीको नष्ट कर दिया। प्रभो! आप इसी प्रकार हमारा अभ्युदय करते रहें

विष्णुपार्षदा ऊचुः

अद्यैतद्धरिनररूपमद्भुतं(न्) ते
दृष्टं(न्) नः(श्) शरणद सर्वलोकशर्म ।
सोऽयं(न्) ते विधिकर ईश विप्रशप्त-
स्तस्येदं(न्) निधनमनुग्रहाय विद्मः ॥ 56॥

भगवान्के पार्षदोंने कहा- -शरणागतवत्सल सम्पूर्ण लोकोंको शान्ति प्रदान करनेवाला आपका यह अलौकिक नृसिंहरूप हमने आज ही देखा है। भगवन्! यह दैत्य आपका वही आज्ञाकारी सेवक था, जिसे सनकादिने शाप दे दिया था। हम समझते हैं, आपने कृपा है करके इसके उद्धारके लिये ही इसका वध किया है ।

इति श्रीमद्भागवते महापुराणे पारमहं(म्)स्यां(म्)

सं(म्)हितायां(म्) सप्तमस्कन्धे प्रह्लादानुचरिते

दैत्यराजवधे नरसिं(म्)हस्तवो नामाष्टमोऽध्यायः ॥

ॐ पूर्णमदः(फ्) पूर्णमिदं(म्)पूर्णात्पूर्णमुदच्यते

पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते ॥

ॐ शान्तिः(श्)शान्तिः(श्)शान्तिः ॥